सहयोगी और समर्थकारी माहौल बनाना | गाँव के एकल शिक्षक वाले स्कूल से मिली सीखें

स्वाति भण्डारी

स्कूल बच्चों के लिए एक दूसरा घर होता है क्योंकि वे अपना अधिकांश समय वहाँ बिताते हैं, और वह शिक्षिका ही होती हैं जो बच्चों को प्यार, सुरक्षा और उनका स्वागत किए जाने का अहसास कराती हैं। यह एक सार्वभौमिक सत्य है कि जब हम महसूस करते हैं कि हमें प्यार किया जा रहा है तब हम ज़्यादा अच्छा प्रदर्शन करते हैं, और जब हम सुरक्षित महसूस करते हैं, हमारे अन्दर आत्मविश्वास आता है। सभी बच्चों के लिए स्कूल को एक ख़ुशनुमा जगह बनाना उस शिक्षक के लिए आसान नहीं होता जिसके पास काम का दबाव बहुत ज़्यादा होता है। एकल शिक्षक वाले किसी स्कूल में यह और भी ज़्यादा कठिन हो जाता है जहाँ शिक्षक को प्रत्येक विद्यार्थी के सीखने के साथ-ही-साथ उसकी बेहतरी पर भी ध्यान केन्द्रित करना होता है और अकेले ही सारे प्रशासनिक काम भी निपटाने होते हैं।

मैं ऐसे ही एक शिक्षक प्रभु राम से मिली जो राजस्थान के राजसमन्द ज़िले के ऐतिहासिक कुम्भलगढ़ ग्रामीण ब्लॉक में स्थित लाडला की भागल शासकीय प्राथमिक स्कूल में पढ़ाते हैं। स्कूल का दौरा करने वाला कोई भी व्यक्ति विद्यार्थियों की शिक्षा पर पड़े प्रभु राम के प्रभाव को साफ़तौर पर देख सकता है। मैं पहली बार इन शिक्षक से तब मिली जब महामारी के दौरान मैंने इस स्कूल का दौरा किया था। उस वक़्त जिस पहली चीज़ ने मेरा ध्यान खींचा वह थी, सीखने-सिखाने की महत्त्वपूर्ण सामग्री (TLM)। इस सामग्री को उन्होंने बहुत मेहनत से तैयार किया था। विद्यार्थियों के सीखने के स्तरों पर आधारित जीवन्त और ख़ुशनुमा माहौल बनाने से बच्चों को सीखने की गतिविधियों में बेहतर तरीक़े से शामिल करना आसान हो जाता है।

एक टीएलएम सबसे अलग दिखाई दे रहा था। वह था, एक टीवी सेट जिसे शिक्षक ने थर्मोकोल की शीटों से बनाया था। इस फ़्रेम के अन्दर, दिखाई जाने वाली सामग्री मुद्रित कहानियाँ और स्लाइडें थीं जिन्हें हाथ से दाएँ-बाएँ घुमाया जा सकता था। यह 'टीवी स्क्रीन' कहानियों की किताबों के बड़े, रंगीन पन्नों को दिखाती थी और विद्यार्थी 'चैनल बदलकर' दूसरी

चित्र-1 : *शिक्षक द्वारा बनाया गया 'टीवी सेट'।*

कहानियाँ 'देख' सकते थे। शिक्षक अपने हाथ से स्क्रीन पर कहानी को दिखाते, और जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती, वह रुककर सवाल पूछते और विद्यार्थियों से अनुमान लगाने को कहते कि आगे क्या हो सकता है। कहानी ख़त्म होने के बाद विद्यार्थी छोटे-छोटे समूहों में बँट जाते थे और अपने पसन्दीदा दृश्यों के चित्र बनाते या संक्षेप में आगे की कहानी लिखते। हाथ से बनाए इस टीएलएम के माध्यम से कृत्रिम रूप से टेलीविज़न देखने के अनुभव को तैयार करके शिक्षक ने सीखने का एक गतिशील और संवादात्मक माहौल तैयार किया। इससे पढ़ना और सीखना, दोनों ख़ुशनुमा और शिक्षाप्रद हो गए।

बच्चों के मूल्यांकन अध्ययन के लिए जब मैं दूसरी बार स्कूल गई, मुझे उनके साथ ज़्यादा समय बिताने का मौक़ा मिला। मैं उनके सीखने के और आत्मविश्वास के असाधारण स्तरों को देखकर दंग रह गई। बहुत-से स्कूल जिनका मैं दौरा करती हूँ, उनमें यह पाती हूँ कि विद्यार्थी अनौपचारिक बातचीत में तो आत्मविश्वास से भरे दिखाई देते हैं, लेकिन जब मैं उनके सीखने के स्तरों का मूल्यांकन करने के लिए सवाल पूछती हूँ, उनके चेहरे पर घबराहट दिखाई देने लगती है। लेकिन इस स्कूल के विद्यार्थियों ने मुक्त भाव से मेरे सवालों का जवाब दिया, जबकि मैं उनके साथ पहली बार संवाद कर रही थी। ऐसा लगता था कि यह स्कूल उनके लिए एक ख़ुशनुमा जगह है। यह जानने के लिए कि यह जगह ऐसी क्यों बनी, मैंने एक पूरा दिन स्कूल में बिताने का निर्णय लिया।

प्रोत्साहन और सहयोग

स्कूल में केवल दो ही कक्ष हैं। इसलिए एक कक्ष में कक्षा-1 व 2 के विद्यार्थी साथ बैठते हैं और कक्षा-3, 4 व 5 के विद्यार्थी दूसरे कक्ष में एक साथ बैठते हैं। विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक और अकादमिक विकास को ध्यान में रखते हुए यह व्यवस्था सावधानी से बनाई गई है। सभी छोटे बच्चों को एक कमरे में रखने से शिक्षक को यह सहूलियत होती है कि वह उनकी व्यक्तिगत ज़रूरतों और सीखने की शैलियों को बेहतर तरीक़े से समझ सकते हैं और उनके अनुसार सिखा सकते हैं।

इसके अलावा, इस व्यवस्था के कारण शिक्षक के कक्षा में नहीं होने की सूरत में बच्चों द्वारा सहपाठियों का सहयोग करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। ऐसे वक़्त में, अकसर कक्षा-2 के विद्यार्थी आगे आकर शिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों के आधार पर कक्षा-1 के विद्यार्थियों का सहयोग करते हैं। मैंने देखा है कि वे प्रभावी तरीक़े से सहयोग करते हैं और आपसी मदद प्रदान करते हैं।

अनामांकित बच्चे (जो नामांकित विद्यार्थियों के साथ ही आते हैं) भी कक्षा-1 और 2 के साथ बैठते हैं और उन्हीं के साथ सीखना शुरू करते हैं। एक वाक़िया है। अक्षर पहचानने के

चित्र-2 : *शिक्षक द्वारा बनाई गई प्रिंट रिच सामग्री से सजी कक्षा।*

एक पाठ के दौरान शिक्षक ने ब्लैकबोर्ड पर सभी अक्षरों को लिख दिया। इसके बाद वह एक अक्षर का नाम पुकारते, और साथ ही एक विद्यार्थी का नाम पुकार कर उसे ब्लैकबोर्ड के पास आने को कहते। वह उस बच्चे से कहते कि उस अक्षर को पहचान कर उसके ऊपर गोला बनाए। कुछ समय बाद, एक अनामांकित बच्चा भी शिक्षक के पास गया और वैसा ही करने के लिए उनसे चाक माँगी ताकि वह भी इस गतिविधि का हिस्सा बन सके। शिक्षक ने उसे चाक का एक टुकड़ा दिया और उस बच्चे ने ब्लैकबोर्ड के पास जाकर एक अक्षर पर गोला लगा दिया। शिक्षक ने पूरी कक्षा से उसके लिए ताली बजाने को कहा। बाद में, जब मैंने शिक्षक से इस बारे में चर्चा की तो उन्होंने बताया कि यह बच्चे के लिए सीखने का पहला क़दम है और दूसरों के लिए इससे समावेशी भागीदारी को प्रोत्साहन मिलता है।

प्रभु राम का पढ़ाने का यह रुख़ बाल-केन्द्रित है, और वह इसमें पाठ्यपुस्तकों के अलावा दूसरे संसाधनों को भी शामिल करते हैं। इनमें से कुछ को उन्होंने ख़ुद ही बनाकर कक्षा की दीवारों पर प्रदर्शित किया है। कक्षाएँ उन प्रिंट रिच सामग्रियों से भरी पड़ी हैं जिन्हें प्रभु राम ने अपने ख़ाली समय में बनाया है।

उनके शिक्षण के सबसे अच्छे पहलुओं में से एक यह था कि वे उपलब्ध संसाधनों का बहुत अच्छा इस्तेमाल करते थे। दीवार पर दर्शाए गए भारत और राजस्थान के मानचित्रों पर चर्चा करते हुए, शिक्षक ने विद्यार्थियों को दिखाया कि मानचित्रों को

कैसे पढ़ा जाता है। उसके बाद, प्रत्येक विद्यार्थी से यह कहा गया कि उन्होंने जो सीखा है उसे सबके साथ साझा करें। इस दौरान शिक्षक उनसे सम्बन्धित सवाल पूछकर उन्हें प्रेरित करते रहे। यदि कोई विद्यार्थी भ्रमित होता, शिक्षक अपने सवालों को थोड़ा बदलकर उसकी मदद करते थे। भाषा पढ़ाते समय वह अख़बार और ग्लोब जैसे कई दूसरे संसाधनों का प्रयोग करते थे।

प्रभु राम प्रत्येक बच्चे पर बराबर ध्यान देते हैं। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी बच्चों को समान अवसर मिलें। उदाहरण के लिए, कक्षा-5 के बच्चों को देश के त्योहारों का अध्याय पढ़ाते समय उन्होंने पाठ में बताए हुए त्योहारों को मनाने के बारे में उनके अनुभवों को सुना और उन्हें चर्चा करने का मौक़ा दिया। कक्षा-3, 4 व 5 के सभी विद्यार्थियों ने चर्चा में भागीदारी की। बाद में, शिक्षक ने उन सभी को अपने सम्बन्धित ग्रेड के आधार पर सवालों के जवाब लिखने के लिए प्रोत्साहित किया।

वहाँ मुझे एक भी ऐसा विद्यार्थी नहीं मिला जो कक्षा की इन गतिविधियों में भाग न ले रहा हो। उनकी कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी ख़ुश और आत्मविश्वास से लबरेज़ था। बच्चे जवाब देते थे और जब उन्हें कुछ समझ नहीं आता था, वे बिना किसी हिचकिचाहट के सवाल पूछते थे। अगर वे चर्चा के दौरान कुछ कहना चाहते तो अपना हाथ उठाते, अपनी बारी का इन्तज़ार करते, और अपने कामों में लगे रहते। एक से अधिक ग्रेड के साथ बैठने के बावजूद विद्यार्थी कक्षा का शिष्टाचार बनाए रखते।

स्वामित्व और ज़िम्मेदारी

यहाँ शिक्षक सीखने का एक ऐसा सकारात्मक माहौल तैयार कर रहे हैं जहाँ बच्चे रोज़ाना की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर स्कूल के साथ अपनेपन की एक मज़बूत भावना महसूस करते हैं। इन गतिविधियों में, स्कूल में इकट्ठा होना और कक्षा की सामग्री की देखभाल की ज़िम्मेदारी निभाना शामिल हैं। यह रुख़ विद्यार्थियों को समर्थ बनाता है, और उनके सीखने की जगह के लिए उनमें एक दायित्वबोध भरता है।

कक्षा के संसाधनों, जैसे खिलौनों, पुस्तकों और शैक्षिक सामग्रियों को सम्हालने और व्यवस्थित करने में बच्चों की भागीदारी को सुनिश्चित करते हुए, शिक्षक उनमें स्वामित्व की संस्कृति का भाव पैदा कर रहे हैं। यह न केवल उन्हें आवश्यक जीवन कौशल सिखाता है बल्कि स्कूल समुदाय के साथ उनके रिश्ते को पोषित भी करता है।

भोजनावकाश के दौरान, बच्चों को खेलने की सामग्री का ज़िम्मेदारीपूर्वक उपयोग करते हुए और बाद में उसे सही तरीक़े से व्यवस्थित करते हुए देखना, साझे संसाधनों को सम्मान देने के महत्त्व के बारे में उनकी समझ को और सीखने का एक साफ़-सुथरा माहौल बनाए रखने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

कुल मिलाकर कहें तो, इन समावेशी व्यवहारों के ज़रिए शिक्षक एक ऐसा सहयोगी और समर्थकारी स्कूली माहौल बना रहे हैं जहाँ बच्चे ख़ुद को महत्त्वपूर्ण, सम्मानित और अपने सीखने के अनुभवों में तत्परता से शामिल महसूस करते हैं। शिक्षक इन बच्चों को ऐसे ज़रूरी कौशलों और आत्मविश्वास के साथ समर्थ बना रहे हैं जो ज़िन्दगी भर इनके व्यक्तित्व का हिस्सा बने रहेंगे और इस स्कूल की बुनियादी संस्कृति का निर्माण करेंगे।

स्वाति भण्डारी सीहोर, मध्यप्रदेश के ज़िला संस्थान में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन की फ़ील्ड रिसर्च टीम का हिस्सा हैं। वे 2017 में एक फेलो के रूप में फ़ाउंडेशन से जुड़ीं। स्वाति को घूमना और नई जगहों व विभिन्न संस्कृतियों की खोज करना बेहद पसन्द है। उनसे swati.bhandari@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : मनीष आज़ाद **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अतुल अग्रवाल